श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

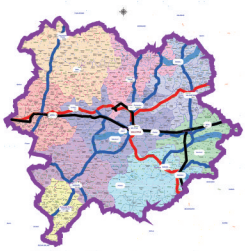

पंच गौरव पुस्तिका

जिला–बालोतरा

जिला प्रशासन, बालोतरा

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

सत्यमेव जयते

जिला कलक्टर
बालोतरा

संदेश

बालोतरा जिला भौगोलिक विविधता, प्राकृति संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्धेश्य राजस्थान के प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, सर्वधन तथा विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृति और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत् हर बालोतरा जिले में **पंच गौरव के रूप में उपज – अनार, खेल – क्रिकेट, उत्पाद – टेक्सटाईल उत्पाद ''रंगाई एवं छपाई'', वनस्पति प्रजाति – रोहड़ा, पर्यटन स्थल – श्री नाकोड़ा जैन मन्दिर** चिन्हित किया गया है। यह पहल बालोतरा जिले की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होगें।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि के साथ ही सभी जिलावासीयो के संयुक्त प्रयासो से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

बालोतरा जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्धेश्यो को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(सुशील कुमार)

अनुक्रमणिका

	पेज संख्या
➢ एक जिला एक उपज– **अनार**	1-5
➢ एक जिला एक खेल– **क्रिकेट**	6 -8
➢ एक जिला एक उत्पाद– **टेक्सटाईल उत्पाद "रंगाई एवं छपाई"**	9-13
➢ एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– **रोहिड़ा**	14-20
➢एक जिला एक पर्यटन स्थल– **श्री नाकोड़ा जैन मन्दिर**	21- 24

एक जिला एक उपज– **अनार**

उद्देश्य :–

जिले में शुष्क जलवायुवीय परिस्थितयाँ, अधिकाशं क्षेत्र में मृदा व भूमिगत जल के लवणीय क्षारीय होनें एवं सिंचाई जल की कम उपलब्धता के दृष्टिगत अनार की खेती की अच्छी सम्भावनाएं है। अनार की प्रति इकाई अधिक आय से किसानो की आमदनी मे वृद्धि।

एक जिला एक उपज– **अनार**

परिचय :–

अनार का अंग्रेजी नाम पोमग्रेनेट (Pomegranate) एवं वानस्पतिक नाम **पुनिका ग्रेनेटम** है। इसका कुल पुनिकेसी एवं उत्पत्ति स्थल ईरान है। विश्व के उष्ण एवं उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों हेतु अनार एक महत्वपूर्ण फसल है, क्योंकि यह विषम एवं प्रतिकूल जलवायु को सहन करने में सक्षम है तथा कम उपजाऊ, उथली, कंकरीली एवं लवणीय मृदा में भी इसकी खेती की जा सकती है। **अनार के पौधों में सूखा सहन करने की अत्यधिक क्षमता होती है,** परन्तु फल विकास के समय नमी आवश्यक होती है। अनार की प्रति ईकाई क्षेत्र अधिक आय की दृष्टि सें बहुत ही लाभदायक होने के कारण गरीबी उन्मूलन एवं निर्वाह खेती के प्रतिस्थापन हेतु उपयुक्त फसल है।

देश में इसका क्षेत्रफल एवं उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है। वर्ष 2023–24 में इसका क्षेत्रफल 2.75 लाख हैक्टेयर एवं उत्पादन 31.87 लाख मैट्रिक टन है। भारत में महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान एवं आन्ध्र प्रदेश अग्रणी अनार उत्पादक राज्य है। वर्ष 2023–24 में जिले में इस फसल का क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 10235 हैक्टेयर, 2.13 लाख मैट्रिक टन एवं 20.82 मैट्रिक टन प्रति हैक्टेयर है।

राजस्थान में शुष्क एवं अर्धशुष्क जलवायुवीय परिस्थितयाँ, अधिकाशं क्षेत्र में मृदा व भूमिगत जल के लवणीय क्षारीय होनें एवं सिंचाई जल की कम उपलब्धता के दृष्टिगत अनार की खेती की अच्छी सम्भावनाएं है। राजस्थान के लगभग सभी जिलों में इसकी खेती की जा सकती है। राजस्थान में इसकी खेती बाड़मेर, बालोतरा, जालोर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चित्तौडगढ़, भीलवाड़ा, बूंदी, बांरा, जोधुपर पाली एवं बीकानेर में बहुतायत से हो रही है। जयपुर, सीकर, नागौर, सिरोही एवं अजमेर में भी यह सफलतापूर्वक उगाया जा रहा है। बालोतरा जिले की सिवाना, सिणधरी, पायलाकला, बालोतरा, समदडी एवं पाटोदी पंचायत समिति मे अनार का क्षैत्रफल लगभग 10235 हैक्टेयर में खेती हो रही है। राजस्थान मे अनार उत्कृष्टता केन्द्र, ढिंढोल, बस्सी (जयपुर) मे स्थित है।

एक जिला एक उपज– **अनार**

महत्व एवं उपयोगिता

आहार विशेषज्ञों के अनुसार मनुष्य को प्रतिदिन 85 ग्राम फलों का उपभोग आवश्यक बताया गाया है। शाकाहारी भारतीयो के भोजन में फलों का सेवन करना स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी माना गया है। घरेलु और विदेशी बाजार में अनार के अच्छे मूल्य की प्राप्ति को देखते हुए राजस्थान के कृषकों का रूझान अनार की खेती करने की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

अनार फलों का महत्व एवं उपयोगिता निम्नानुसार है–

1. अनार विटामिन का बहुत अच्छा स्त्रोत है, इसमें विटामिन ए, सी, ई और फोलिक एसिड तथा लोहा, पोटेशियम, फॉस्फोरस, कैल्शियम प्रचूर मात्रा में पाये जाते है। **अनार के प्रति 100 ग्राम फल में 6 ग्राम प्रोटीन, 0.1 ग्राम खनिज, 5.1 ग्राम रेशा, 14.5 मि. ग्राम कैल्शियम, 70 मि. ग्राम फास्फोरस, 0.3 मि. ग्राम लौह, 0.1 मि. ग्राम राइबोफ्लेविन, 0.3 मि. ग्राम नियासिन, 16 मि. ग्राम विटामिन–सी होता है।**
2. अनार फल एन्टीऑक्सिडेंट के प्राकृतिक स्त्रोत के रूप में सर्वोत्तम माना जाता है।
3. ताजा फलों के उपभोग के अतिरिक्त विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पादों यथा रस, शर्बत, न्यूनतम प्रसंस्कृत एरिल्स, आर.टी.एस. (रेडी टू सर्व), कार्बोनेटेड पेय, अनारदाना, जैम, जेली, वाइन इत्यादि के रूप में इसका उपयोग किया जाता है।

एक जिला एक उपज– **अनार**

- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया–

Name of Work :- Construction of Various Works at Sub yard Padru Under KUMS Balotra

S.No.	Name of Work	Estimated Cost (In Lacs.)
1	Construction of Secretary office Building at Sub yard Padru Under KUMS Balotra	17.24
2	Construction of Covered Auction Platform at Sub yard Padru Under KUMS Balotra	81.86
3	Construction of Internal Gravel Road at Sub Padru Under KUMS Balotra	7.44
4	Construction of Toilet Block (01 Nos.) at Sub Padru Under KUMS Balotra	1.97
5	Construction of Kiosk (01Nos.) at Sub yard Padru Under KUMS Balotra	4.00
6	Construction of Water Hut (01 Nos) at Sub yard Padru Under KUMS Balotra	3.39
	TOTAL	**115.90**

एक जिला एक खेल– क्रिकेट

क्रिकेट का ही चयन क्यों किया :–

वर्तमान समय में बच्चों से लेकर वृद्ध जनों तक सबके द्वारा क्रिकेट खेल को ज्यादा पसंद किया जाता है व गत वर्षो में भारतीय टीम के शानदार खेल प्रदर्शन से युवाओं में खेल के प्रति ज्यादा उत्साह है। बालोतरा जिला में क्रिकेट के प्रति अति उत्साहित बच्चों और युवाओं एवं युवतियों होने के कारण प्रति वर्ष ऐकेडमी/क्लबों एवं सभी समाज के युवाओं द्वारा समय समय पर जिला व राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोंगिताऐं आयोजित करवाई जाती है। जिसमें राज्य में से क्रिकेट के प्रतिभाशाली खिलाड़ी भाग लेते है जिनकों बालोतरा के विभिन्न भामाशाहों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है।

बालोतरा जिला के होनहार खिलाड़ी :–

बालोतरा जिला में प्रतिवर्ष विद्यालयी खेलकूद प्रतियोंगिता में राज्य व राष्ट्रिय स्तर पर भाग लेते है। पूर्व एवं वर्तमान सत्र में 80 छात्र – छात्राओं का राज्य स्तर तथा विद्यालयी राष्ट्रिय स्तर प्रतियोगिता में 2 छात्र एवं 2 छात्राओं का चयन हुआ है। कॉल्विन शिल्ड प्रतियोगिता में 04 छात्र व 02 छात्राओं ने भाग लिया था।

एक जिला एक खेल– क्रिकेट

- **कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया–**

क्र. सं.	अवसंरचना	विस्तृत विवरण	कुल अनुमानित लागत
1	क्रिकेट नेट प्रेक्टिस सुविधा अवसंरचना	20X150X17 Feet लौह के पोल व नेट से कवर्ड नेट प्रेक्टिस क्षेत्र	5.00 लाख
		सीमेंटेड पीच 70X10 क्षेत्र	2.00 लाख
		Turf Wicket	3.00 लाख
		Cricket Mate	1.00 लाख
		Cricket Kit	1.00 लाख
		Balling Machine	5.00 लाख
		High Mask Light	10.00 लाख
		Electric Roller	2.80 लाख
		Out Field Grass	3.00 लाख
		खेल मेदान के पास शौचालय/मूत्रालय निर्माण	2.00 लाख
		योग :–	34.80 लाख

एक जिला एक खेल– क्रिकेट

एक जिला एक उत्पाद– टेक्सटाईल उत्पाद ''रंगाई एवं छपाई''

राजस्थान में बालोतरा जिला देश के सबसे प्रमुख कपड़ा केंद्रों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित है, विशेष रूप से अपने जीवंत हाथ से ब्लॉक प्रिंटिंग, रंगाई और कपड़ा निर्माण उद्योगों के लिए जाना जाता है। शुष्क थार रेगिस्तान में बसा बालोतरा का कपड़ा उद्योग अपने लोगों की लचीलापन और सरलता का प्रमाण है, जो पारंपरिक शिल्प कौशल को आधुनिक औद्योगिक तकनीकों के साथ मिलाता है। जटिल रूप से मुद्रित सूती कपड़ों से लेकर किफ़ायती नाइटवियर और ड्रेस मटीरियल तक कपड़ा उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला के उत्पादन के लिए जाना जाता है - बालोतरा ने घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों में अपनी जगह बनाई है।

एक जिला एक उत्पाद– टेक्सटाईल उत्पाद "रंगाई एवं छपाई"

- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य / गतिविधिया–
- 1. **उत्पाद ब्रांडिंग**:

गतिविधि का विवरण	अनुमानित लागत
डिस्प्ले वॉल- जिले के प्रत्येक उपखंड अधिकारी कार्यालय एवं प्रत्येक पंचायत समिति कार्यालय में ODOP उत्पाद का खुदरा विक्रेताओं को आकर्षक मार्जिन और ब्रांडेड डिस्प्ले स्टैंड प्रदान किया जाए. इसके लिए प्रवेश द्वार पर शो केस या डिस्प्ले वाल बनाई जाए.	रु. 25 लाख
कॉफ़ी टेबल बुक / कैटेलॉग का निर्माण- जिले के हस्तशिल्प, हस्तशिल्पियों और विक्रेताओ की सूचना का संकलन करते हुए एक पुस्तिका बनाई जाये.	रु. 3 लाख
ब्रांड लोगो और टैगलाइन विकसित करना- जिले में खुली प्रतियोगिता का आयोजन कर बालोतरा टेक्सटाइल हेतु ब्रांड लोगो और टैगलाइन विकसित करवाना. जिससे लोगों में भी उत्पाद से जुड़ाव बढे और जानकारी का प्रचार हो.	रु. 2 लाख
कुल व्यय	रु. 30 लाख

एक जिला एक उत्पाद– टेक्सटाईल उत्पाद "रंगाई एवं छपाई"

- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया–
- 2. **जागरूकता कार्यक्रम-**

गतिविधि का विवरण	अनुमानित लागत
कंटेंट मार्केटिंग और स्टोरी टेलिंग- बालोतरा के टेक्सटाइल को विशिष्ट बनाती कढ़ाई, रंगों और डिज़ाइनों तथा टेक्सटाइल रंगाई छपाई पर काम करते कारीगरों और सजावटी तत्वों जैसे वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों को प्रदर्शित करने वाली वीडियो सामग्री/ रील्स/ शोर्ट फिल्म्स बनवाई जाये.	रु. 4 लाख
सोशल मीडिया द्वारा प्रचार- बालोतरा टेक्सटाइल के इतिहास, तकनीकों और सांस्कृतिक महत्व, कारीगरों की यात्रा की कहानियाँ , उनके कौशल, संघर्ष, जुनून और पारंपरिक कला को जीवित रखने के प्रयासों तथा टेक्सटाइल की सुंदरता और उपयोग के मामलों के बारे में क्यूरेटेड सामग्री के साथ सोशल मीडिया प्रोफाइल (इंस्टाग्राम, फेसबुक, लिंक्डइन) बनाएँ।	रु. 1 लाख
कुल व्यय	रु. 5 लाख

एक जिला एक उत्पाद– टेक्सटाईल उत्पाद "रंगाई एवं छपाई"

- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया–
- 3. **<u>प्रशिक्षण एवं कौशल विकास -</u>**

गतिविधि का विवरण	अनुमानित लागत
<u>डिजाईन डेवलपमेंट</u>- स्थानीय कारीगरों को आधुनिक डिजाईन और विविध मांग के अनुरूप टेक्सटाइल में कौशल विकसित करने के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थापित किया जाए.	रु. 5 लाख
<u>तकनीकी उन्नयन</u> - हस्तशिल्पियों/विनिर्माताओं को आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण देने हेतु आईटीआई में centre of excellence/ इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना की जाए.	रु. 50 लाख
<u>निर्यातकों का क्षमता निर्माण</u> - ODOP उत्पाद के निर्यात प्रोत्साहन हेतु जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र, बालोतरा में एक निर्यातक सुविधा केंद्र (Export Facilitation Centre) की स्थापना की जाए	रु. 10 लाख
<u>कुल</u> व्यय	रु. 65 लाख

एक जिला एक उत्पाद– टेक्सटाईल उत्पाद "रंगाई एवं छपाई"

- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य / गतिविधिया–
- **4. पर्यटन प्रोत्साहन-**

गतिवधि का विवरण	अनुमानित लागत
ODOP गार्डन- जिले मे एक ODOP गार्डन की स्थापना की जाए, जहाँ उत्पाद की प्रदर्शनी और बिक्री के साथ साथ पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके.	रु. 100 लाख

कार्ययोजना पर कुल अनुमानित व्यय- रु. 200.00 लाख

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– **रोहिड़ा**

प्रस्तावना:

- रोहिड़ा वृक्ष, जिसका वैज्ञानिक नाम *Tecomella undulata* है, एक महत्वपूर्ण औषधीय और पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण पेड़ है।
- यह वृक्ष गर्म और शुष्क जलवायु में पनपता है और इसकी लकड़ी का उपयोग निर्माण कार्यों, कृषि उपकरणों, और पारंपरिक चिकित्सा में भी होता है।

वृक्ष का जैविक महत्व:

- पारिस्थितिकी तंत्र में योगदानः– रोहड़ा वृक्ष पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। काफी कम वर्षा में भी पनपने के कारण, साल भर हरा रहने के कारण यह वन्यजीव एवं पक्षियों के प्रजनन के लिए जलवायु–स्थिर क्षेत्रों में उपयुक्त आवास प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त आसपास के सूक्ष्म जलवायु को नियंत्रित कर यह वृक्ष स्थानीय वनस्पति तथा घास को बढ़ावा देता है और जैव विविधता को बढ़ाने में सहायक होता है।
- मिट्टी का संरक्षणः– रोहड़ा वृक्ष का मजबूत तंतु–मंडल मिट्टी के कटाव को रोकने और जमीन की उर्वरता बनाए रखने में मदद करता है।

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– रोहिड़ा

आर्थिक उपयोगिता :–

- रोहिड़ा की लकड़ी इमारती होने केकारण मकान एवं फर्नीचर बनाने में उपयोगी हैं।
- रोहिड़ा की लकड़ी पर दीमक, नमी एवं कीट पतंगो का प्रभाव नहीं होने के कारण काफी कीमती होती हैं तथा किसानों को आमदनी का साधन प्रदान करती हैं।
- रोहिड़ा के फूलों से हर्बल गुलाल बनाया जाता हैं।
- खेतो में मृदा संरक्षण, मिट्टी कटाव को रोकना एवं भू–जल का स्तर बढाने में काफी महत्वपूर्ण योगदान देता है जिससे कृषि उपज में वृद्धि होती हैं।

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– रोहिड़ा

स्वास्थ्य लाभः

- रोहड़ा वृक्ष की छाल, पत्तियाँ, और फूल आयुर्वेदिक चिकित्सा में प्रयोग होते हैं। इसके कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं:–
- मधुमेह का उपचारः यह रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।
- घावों का इलाजः इसकी छाल और पत्तियाँ घावों को जल्दी भरने में सहायक होती हैं।
- सांस की समस्याएंः यह श्वसन तंत्र के लिए भी लाभकारी है और जुकाम व खांसी से राहत दिलाने में सहायक है।

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– रोहिड़ा

स्वास्थ्य लाभः

- रोहड़ा वृक्ष की छाल, पत्तियाँ, और फूल आयुर्वेदिक चिकित्सा में प्रयोग होते हैं। इसके कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं:–
- मधुमेह का उपचार: यह रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।
- घावों का इलाज: इसकी छाल और पत्तियाँ घावों को जल्दी भरने में सहायक होती हैं।
- सांस की समस्याएं: यह श्वसन तंत्र के लिए भी लाभकारी है और जुकाम व खांसी से राहत दिलाने में सहायक है।

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– **रोहिड़ा**

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– रोहिड़ा

संरक्षण रणनीतियाँ:

रोहड़ा वृक्ष का संवर्धनः उचित स्थानों पर रोहड़ा वृक्षों की खेती और रोपण को बढ़ावा देना।

शुष्क क्षेत्रों में वृक्षारोपणः शुष्क और अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में वृक्षारोपण को बढ़ावा देना, जिससे पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखा जा सके।

स्थानीय समुदायों को जागरूक करनाः स्थानीय समुदायों को इस वृक्ष के संरक्षण और इसके लाभों के बारे में जागरूक करना।

मुख्यमंत्री बजट घोषणा अन्तर्गत हरियालो राजस्थान के तहत रोहिड़ा का अधिकाधिक पौधारोपण करना।

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– रोहिड़ा

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां :

क्र. सं.	गतिविधि का नाम	अनुमानित राषि (लाखों में)	विशेष विवरण
1	रोहिड़ा के 1.00 लाख पौधे तैयार कर वितरण हेतु नर्सरी का अपग्रेडेषन	10.00	वर्मी कम्पोस्ट, पॉली बैग, खाद इत्यादि का क्रय, पक्का बेड निर्माण, बेंचेज, साईन बोर्ड इत्यादि
2	वन मित्रों को रोहिड़ा वृक्ष के संवर्द्धन हेतु प्रषिक्षण देना	1.50	नई प्रौद्योगिकी, उन्नत वानिकी तकनीको और नवीनतम पेकेज ऑफ प्रेक्टिसेज के उपयोग से उपज और लाभ बढाने के प्रयास के साथ प्रषिक्षण देना
3	रोहिड़ा वृक्ष पर बुकलेट व पेम्पलेट वितरण	0.75	5000 पेम्पलेट व 500 बुकलेट का वितरण
4	स्मृति उद्यान हिल्ली में रोहिड़ा वृक्ष के लिए एक दिवसीय मेला एवं उत्पादों की प्रदर्षनी	1.50	क्रेता विक्रेता बैठकों, प्रदर्षनियों आदि का आयोजन करके रोहिड़ा की महत्वता की जानकारी देना
5	वृक्षारोपण कार्यक्रमः शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण अभियान चलाना।	0.50	स्थानीय शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमः लोगों को इस वृक्ष के लाभ और संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना।
6	संसाधन संकलनः रोहड़ा वृक्ष के विभिन्न भागों का सामुदायिक उपयोग और व्यापारिक उपयोग बढ़ाने के लिए संसाधन संकलन करना।	0.75	उत्पादो की जिओ–टेगिंग, प्रोडक्ट पेकेजिंग, ऑनलाईन एडवरटाईजिंग की सहायता से ''एक जिला एक उत्पाद'' को बढावा देना।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम में अनुमानित व्यय 15.00

(लाख रू. में)

एक जिला एक पर्यटन स्थल– **श्री नाकोड़ा जैन मन्दिर**

एक जिला एक पर्यटन स्थल– **श्री नाकोड़ा जैन मन्दिर**

एक जिला एक पर्यटन स्थल– **श्री नाकोड़ा जैन मन्दिर**

एक जिला एक पर्यटन स्थल– **श्री नाकोड़ा जैन मन्दिर**